गोपाल राजू की चर्चित पुस्तक, ''अंध विश्वास सत्य और तथ्य'' का संक्षिप्त सार–संक्षेप

गोपाल राजू रुड़कवी
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाइन, रुड़की – 247667
फोन नं– 60111555
साइट : www.astrotantra4u.com

केवल सुपात्र के पैर छूना

पैर छूना और छुआना कहाँ तक वैज्ञानिक है ? इससे क्या हानि है और क्या लाभ ? यह विषय सूक्ष्मवाद का है। प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक आभामण्डल है। अनेक पशु–पक्षिया में इसे देखने की प्राकृतिक शक्ति होती है। मनुष्य भी मात्र थोड़े से अभ्यास द्वारा इसे देख सकता हे। देवी–देवताओं के फोटो के साथ उनके पृष्ठ भाग में तेज का एक गोला भी दर्शाया जाता है। यह आभा मण्डल ही है। जिस प्रकार एक्युम्यूलेटर अथवा इलेक्ट्रिक मशीन में विद्युत सचित हो जाती है। उसी प्रकार मनुष्य में भी ऊर्जा का भण्डार होता रहता है। यही ऊर्जा तेज, आभामण्डल के रूप में शरीर के चारों ओर अण्डाकार रूप म विद्यमान रहती है। शरीर से निरन्तर इसका ह्रास होता रहता है। योगी–सन्त पुरुष इस ऊर्जा को संचित करे रखने में सक्षम होते ह। इस आभामण्डल को क्रिलियोन तथा पी0आई0पी0 फोटोग्राफी द्वारा देखा जा सकता है।

हमारे शरीर का सबसे संवेदनशील भाग पैर के अंगूठे में वह भाग है जहाँ नाखून का मूल भाग खाल में धंसा होता है। यह बात अधिकांश लोग नहीं जानते। मैंने यह तिब्बती साहित्य से जाना था। अपना अनुभव भी ऐसा ही है। कविता, मेरी पत्नी, को मरे तीसरा दिन था। उसके मोह पाश में मै अधीर था। आसूँओं का कोश भी रिक्त हो चुका था। सायंकाल मैं घर के बाहार स्थित नीम के पेड़ के नीचे खड़ा, मूक दर्शक बना, पिछले घटनाक्रमों में खोया था। अकस्मात मेरी आँखों के सामने अंधेरा छा गया। उस अंधेरे में मुझे दीपक की लौ के आकार की एक वस्तु दिखाई दी। धरती से उस लौ की ऊँचाई कोई साढ़े–पाँच फुट की थी। धीरे–धीरे वह लौ मेरे अंगूठे के उस भाग तक आई जिसका मैं ऊपर वर्णन कर आया हूँ। उस लौ ने मेरा वह भाग स्पर्श किया। मुझे जो अनुभूति हुई उसका वर्णन करना असम्भव है। समझिए उस समय ठीक वैसा आनन्द मिला जैसा कि संभोग की चरम सीमा आने पर मिलता है। सम्भवतः यही ब्रह्म आनन्द रहा हो। वह लौ फिर उसी ऊँचाई तक उठ गयी और पुनः अंगूठा स्पर्श करने के लिए झुकी। मैं सो नहीं रहा था, पूरी चेतना में था। उस ब्रह्म–सुख की अनुभूति तीन बार हुई। तीसरी बार वह लौ अदृश्य हो गयी और वह अलौकिक आनंद भी।

किसको बताऊँ कि वह क्या था ? कौन विश्वास करेगा ? यह सब मैं इसलिए भी नहीं लिख रहा कि झूठी प्रशंसा अथवा प्रचार–प्रसार का पात्र बनुँ। यह लिखने का मात्र उद्देश्य यही है कि शरीर में सबसे संवेदनशील भाग का अनुभूत स्थान बता सकूँ। यह वह स्थान है जहाँ से निरन्तर शरीर की संचित ऊर्जा को भूमिगत होने का माध्यम मिला जाएगा। छूने वाले व्यक्ति के शरीर में भी यह ऊर्जा पहुँचगी इसीलिए अनेक साधु–संत अपना शरीर विशेष रूप से पैर नहीं छूने देते।

हमारे शरीर का सबसे अच्छा रिसीवर भौंहों के मध्य का भाग अर्थात भकुटी है। आपने भी अनुभव किया होगा कि थोड़ा–सा भी भूले और याद करने का उपक्रम प्रारम्भ होते ही हाथ तुरन्त इसी भाग पर पहुँचता है। जैसे यहाँ कोई बटन लगा हो जो दबाते ही स्मृति पुनः लौटा दें। पैर पर माथा इसी उद्देश्य से रखा जाता है। वहाँ से निकलने वाला तेज मस्तक के इस भाग में व्यक्ति के शरीर में समा जाता है। लेख में मैंने यह इसीलिए लिख दिया है कि व्यर्थ म हर किसी के न तो पैर छुएं और न ही

उसे अपने पैर छूने दें, क्योंकि पता नही इस प्रकार आप अपनी कितनी ऊर्जा व्यर्थ गवाँ दें।

गोपाल राजू रुड़कवी
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाइन, रुड़की – 247667
फोन नं– 60111555
साइट : www.astrotantra4u.com